> "हार्ट अटैक की तरह टांगों के निचले हिस्से में लेग अटैक हो सकता है। इसे हृदय रोग की तरह ही खतरनाक माना जाता है। इस बीमारी की उपेक्षा से व्यक्ति अपंग भी हो सकता है।"

टांगों की भी होती है बाईपास सर्जरी

■ डॉ. संदीप अग्रवाल

रस्तोगी साहब को कोई 8–10 वर्ष से डायबिटीज़ है। लाख कोशिश करने पर भी वह सिगरेट की लत से छुटकारा नहीं पा सके। उनकी शुगर का कंट्रोल भी अच्छा नहीं चल रहा था। इधर उन्हें नई समस्या महसूस होने लगी। जब वह चलते थे तो उन्हें 20–25 कदम पर चलने से दाएँ पैर में टीस जैसा दर्द होने लगता था और उन्हें वहीं रुकना पड़ता था। कुछ देर आराम करने पर दर्द ठीक हो जाता और वह फिर उतना ही चल पाते और दर्द फिर होने लगता जिसके बाद उन्हें फिर रुकना पड़ता। उन्हें यह भी महसूस किया कि उनका दायाँ पैर बाएँ की अपेक्षा कुछ ठण्डा रहता है एवं दाएँ पैर के बाल भी गायब हो गये हैं।

श्री रस्तोगी अपनी समस्या लेकर डॉक्टर को दिखाने पहुँचे। डॉक्टर साहब ने उन्हें बताया कि उनकी समस्या को इंटरमीटेन्ट क्लोडीकेशन (Intermittent Claudication) कहते हैं। इसमें पैर की ओर खून ले जाने वाली नलियाँ (Arteries) सिकुड़ जाती हैं या उनमें खून का थक्का (Clot) जमने लगता है। ऐसी स्थिति में रुकावट के बाद वाले हिस्से में खून का प्रभाव कम हो जाता है। जब मरीज़ चलता है तब उसके प्रभावित हिस्से में खून एवं ऑक्सीजन की कमी ज्यादा तीव्रता से महसूस होती है और उसे दर्द होने लगता है। यह स्थिति हृदय में होने वाले एन्जाइना (Angina) के दर्द से बिल्कुल मिलती–जुलती है।

जिस प्रकार हृदय की खून की नलियों में रुकावट होने पर बायपास सर्जरी द्वारा उसे ठीक किया जा सकता है उसी तरह पैरों में खून की रुकावट को भी बायपास सर्जरी द्वारा ठीक किया जा सकता है।

अक्सर लोग हार्ट अटैक (यानी दिल की ओर जाने वाली खून की नसों में रुकावट आना) को बहुत गम्भीरता से लेते हैं, क्योंकि हर व्यक्ति को इसकी

रक्त प्रवाह में रुकावट

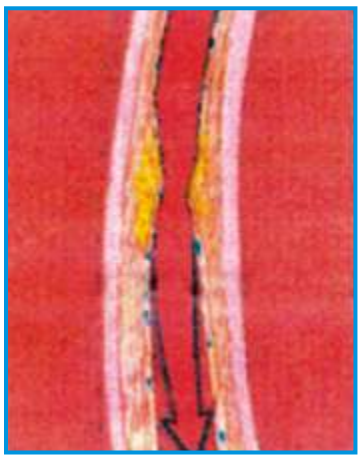

बहुत धीमा रक्त प्रवाह

रुका हुआ रक्त प्रवाह

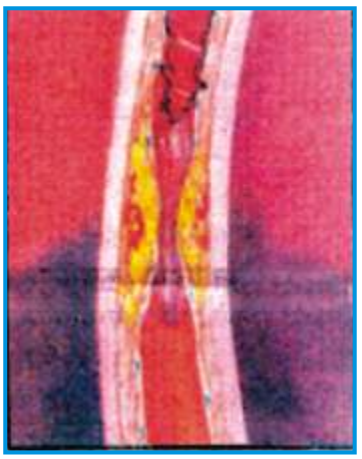

जानकारी और इसके परिणामों का पता है। रोगी की मृत्यु तक हो सकती है, लेकिन यह अटैक किसी और अंग में भी आ सकता है और घातक होता है। शरीर के हर अंग को काम करने के लिये रक्त की जरूरत होती है। अगर उस अंग तक रक्त की जरूरत होती है। अगर उस अंग तक रक्त की सप्लाई न हो, तो कहा जाता है कि अटैक आया है। समय पर इलाज न होने पर रक्त की कमी से हार्ट काम करना बंद कर दे, तो उसे हार्ट फेल होना कहा जाता है। वहीं अगर टांगों में रक्त की सप्लाई न पहुँचे, तो लेग अटैक आ सकता है। यह आगे चल कर गैंग्रीन में बदल सकता है, जिससे बाद में टांग काटनी पड़ सकती है। टांगों के दर्द को गम्भीरता से न लेने पर भारत में हर साल हजारों लोग अज्ञानवश अपंग हो जाते हैं। 'लेग अटैक' यानी टांगों के निचले हिस्से की खून की नस में रुकावट अथवा अन्य अंगों की रक्त धमनियों में रुकावट के कारण प्रभावित अंग गैंग्रीन (अंगों का काला पड़ना) से ग्रस्त होकर बेकार हो जाता है। आजकल आधुनिक जांच तकनीकों की मदद से ऐसी स्थिति का पूर्वानुमान करके व्यक्ति को विकलांग होने से बचाया जा सकता है। हार्ट अटैक की तरह पैरों में दर्द का कारण लेग अटैक हो सकता है और इसकी जाँच एंजियोग्राफी से होती है। इलाज के लिये ऐंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी करनी पड़ती है। अगर आपकी टांगों में या पिंडलियों में अचानक बहुत तेज दर्द उठता है या कुछ दूर चलने पर ही आपके पैरों में दर्द होने लगता है, जो कि पहले नहीं होता था और आराम करने पर ठीक हो जाता है, तो ये लक्षण इस बात का संकेत है कि पैरों में खून की नसों में कोई रुकावट है, जिसकी वजह से रक्त की आपूर्ति कम है। उस समय तो इस तरह के अटैक होने का खतरा और बढ़ जाता है, जब आप दिल के मरीज हों, आपको बी.पी. या डायबिटीज़ की बीमारी हो, आप बीड़ी/सिगरेट पीते हों या आपकी उम्र चालीस से अधिक हो। मधुमेह के रोगियों को शुगर पर खास नियंत्रण रखना चाहिए।

पैरों को रक्त की आपूर्ति करने वाली पेट में स्थित मुख्य रक्तवाहिनी में रुकावट आने से कमर दर्द को अक्सर सायटिका, डिस्क या कैल्शियम की कमी आदि सोचकर नजरअंदाज कर दिया जाता है, जबकि हमारे देश में इस समस्या का प्रतिशत काफी अधिक है और ठीक से इलाज न होने पर हर साल हजारों लोगों को पैर कटवा कर विकलांग होना पड़ता है। काम करते वक्त अगर अचानक हाथ में तेज दर्द उठे और काम रोक देने पर दर्द बंद हो जाए या कम हो जाए, तो यह हाथ की खून की नसों में रुकावट शुरू होने का संकेत है। इसके बाद हाथों में नीलापन या कालापन आने लगता है। अंतिम व्यवस्था में हाथ पूरा काला हो चुका होता है और काटना पड़ सकता है। वैसे अब तो गैंग्रीन का पहले से पता लगाया जा सकता है। पहले ऐसी कोई तकनीक नहीं थी, लेकिन अब डॉप्लर जांच, एंजियोग्राफी जैसी अति आधुनिक जांच विधियों की सहायता से समय पर इसका पता लगा कर उसका इलाज किया जा सकता है और व्यक्ति को सारी जिंदगी लाचार होकर जीने से बचाया जा सकता है। ●●●

– डॉ. संदीप अग्रवाल
(कन्सल्टेंट वास्कुलर सर्जन)
सर गंगाराम अस्पताल, दिल्ली